# मैथिली प्रबन्ध-काव्यमे नायिका

◆ वीरेन्द्र झा

श्रव्य प्रबन्धक एक प्रकार 'प्रबन्ध-काव्य' थिक। ई इतिवृत्तात्मक कथासँ भिन्न पद्य-बंध काव्यरूप होइछ। कथाकाव्य जकाँ ईहो अलंकृत शैलीमे रसात्मक कथा होइत अछि, मुदा दुनूक दृष्टिकोण, उद्देश्य आ विषय-वस्तुमे मौलिक अन्तर होइछ।

ई उद्देश्य प्रधान होइत अछि, एकर लक्ष्य कलात्मक आनन्दक आदर्श-जीवनक प्रेरणा देब होइछ। कथा-काव्य जकाँ एकर उद्देश्य मनोरंजन आ उत्सुकताकेँ शान्ति प्रदान करब मात्र नहि होइत अछि। काव्य-दीक्षित वा शिक्षित पाठकवर्गकेँ ध्यानमे राखि प्रबन्ध-काव्यक कवि अपन मौलिक काव्य-प्रतिभासँ नवीनता अनैत छथि। एही कारणेँ प्रबन्ध-काव्यमे परम्परा आ नवीनता, सहजता ओ पाण्डित्य, मनोरंजन तथा सोद्देश्यता एवं यथार्थ आ कल्पनाक मणिकांचन संयोग भेटैत अछि। एकर शैली सेहो अलंकृत, उदात्त आ गरिमामय होइछ। कविक सूक्ष्म निरीक्षण-शक्तिक फलस्वरूप विवृत वस्तु-वर्णन, मनोवैज्ञानिक चित्रण ओ तत्त्वनिरूपणक प्रवृत्ति बेसी रहैत अछि।

उपर्युक्त कोटिक रचनामे मनबोधक *कृष्णजन्म*, तन्त्रनाथ झाक *कीचक-वध* आदि तँ अबिते अछि संगहि मैथिलीक प्रसिद्ध लोकगाथा, यथा—सलहेस, लोरिकाइन, दीना-भद्री इत्यादि सेहो परिगणित होइछ।

***कृष्णजन्म*** : अठारहम शताब्दीक मनबोध विरचित *कृष्ण-जन्म* मे श्रीकृष्णक प्रति माता यशोदाक मातृत्वक वर्णन सहज, सरल ओ सरस भाषामे भेल अछि। एहिसँ एकटा एहू नव परम्पराक मैथिलीमे सूत्रपात भेल जे पूर्वमे नायिकाक चित्रण शृंगारिके रूपमे होइत छल, मुदा एतऽ ममतामयी माताक प्रतिमूर्त्तिक रूपमे यशोदाकेँ उपस्थापित कयल गेल अछि। मातृत्वकेँ नारित्वक चरम विकास उचिते कहल गेल छैक।

कवि एहिमे श्रीकृष्णक नाना प्रकारक बाल सुलभ चंचलताक चित्रणक क्रममे

कखनहुँ 'जसोमतिकेँ हिअ हाथ हेरायल' तँ कतहुँ 'जसोमतिकाँ भेल जिवक जंजाल' आदिसँ यशोदा माताक स्वाभाविक मनोदशा आ कृत्रिम क्रोधकेँ प्रकट कयलनि अछि। अन्ततः माताक हार्दिक आह्लाद प्रकटित भैए जाइछ। हुनक वात्सल्य वर्णनक दर्शन लेल निम्न अंश द्रष्टव्य थिक—

*आँगन सुन देखि नयन नोरायल।*
*जसोमति काँ हिअ हाथ हेरायल॥*
*की फल भेल मोहि एतेक अगोरि।*
*नञ हरि ऊखरि नञ ओ डोरी॥*
*कनइत जसोमति पहुँचलि जाय।*
*नेरु हेरएने जेहने धेनुगाय॥*[1]

उपर्युक्त अंशमे श्रीकृष्ण द्वारा विशालकाय वृक्ष-अर्जुनकेँ खसयबाक पश्चात् माता यशोदाक प्रतिक्रियाक स्वाभाविक रूपेँ अभिव्यक्ति अछि। प्रसंग छल अतिशय चंचलताक कारणेँ श्रीकृष्णकेँ उखरि लगाय बान्हि देलाक बाद आब पड़यबाक चुनौती देबाक—

*कहलन्हि सिखबह हमरहि ताही।*
*टांग तोरिअ तौं केओ हम नाही॥*
*मानिअ नहिँ एत एत बरजीअ।*
*अहीँ हमर सभ केओ भेल छीअ॥*
*ई कहि बन्हलन्हि उखरि लगाए।*
*कहलन्हि पुत रिंग जाउ तोँ पराए॥*[2]

श्रीकृष्णक बालोचित व्यवहारसँ यशोदा भितरे-भीतर आनन्दित-आह्लादिते होइत छथि—

*कय बेरि साप धरय पुनि जाथि।*
*कय बेरि चून दही बदि खाथि॥*
*कौसल चलथि मारिकहुँ चाल।*
*जसोमति काँ भेल जिबक जंजाल॥*

एहि तरहेँ *कृष्णजन्म* मे माता यशोदा नटखट पुत्र श्रीकृष्णकेँ अनुचित-वर्जित कार्य करबासँ रोकैत हुनक चरित्र निर्माणक लेल वात्सल्य भावेँ शिक्षा दैत देखाइत छथि।

***कीचक-वध*** : बांग्लाक माइकेल मधुसूदन दत्तसँ प्रेरित-प्रभावित भऽ मैथिलीमे पहिले पहिल 'ब्लैंक वर्स' (अमित्राक्षर छन्द) मे *कीचक-वधक* रचना तन्त्रनाथ झाक उल्लेखनीय प्रबन्ध-काव्य छनि।

*महाभारतक* कथापर आधारित एहि कृतिमे मत्स्यदेशाधिपति विराटमहिषी

सुदेष्णाक भाइ आ मत्स्यराज्यक सेनानायक कीचकक वध वर्णित भेल अछि। एकर चारिम सर्गमे कीचकक ओहि ठाम 'सैरंध्री' छद्म नाम ओ भेषमे जाइत द्रौपदीक प्रभाव पूर्ण चित्रण भेल अछि। द्रौपदीक आत्मविश्वास आ तेजोद्दीप्तिक लेल निम्न अंश द्रष्टव्य थिक—

*क्षत्रिय-पुत्रि, वीर पत्नी, कुल नारि*
*निर्भय हम जाइत छी कीचक गेह।*

* * *

*आन पुरुष प्रति कखनहुँ स्वप्नहुँ चित्त*
*नहि कीचक कऽ सकत हमर तन स्पर्श।*

डॉ. जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे एहि प्रसंग उचिते मन्तव्य देलनि अछि— "It describes the feelings that sway the mind of Draupadi while she is asked to fetch wine from the room of Kichaka. She recalls her glorious home, her svayamvara, her days in the company of Arjuna, her survival of the ordeal presented by Duhsasana, and finally concludes that Kichaka cannot even touch her. There is no hurrying over moods and emotions here, each possible turn is explored, and is briefly but imaginatively conceived."

देवकान्त झाक कहब सेहो समीचीन छनि — "The development of Draupadi's confidence and the role she palys as a brave woman is essential to the episode: her attainment of the essence of womanhood is the real contribution of the poem."[3]

एहि रूपेँ प्रस्तुत प्रबन्ध-काव्य *कीचक-वध*मे द्रौपदीक रूपमे नायिकाक आत्मविश्वास, साहस, मर्यादित आचरण ओ तेजक प्रभावपूर्ण प्रकटीकरण भेल अछि।

**सल्हेस :** सल्हेसमे नायिका दौना मालिन छथि। ई प्रोषितपतिका (नायिका) छथि; पतिक अभावमे एहि कोटिक नायिकाक जीवन पहाड़ सन बुझना जाइछ। सलहेसक प्रेममे उन्मत्त दौनाक मिलनक उत्कंठा निम्न अंशमे द्रष्टव्य थिक—

*हिआ हरिकेँ चललीह मालिन*
*कनैत चललीह मालिन स्वामीक उदेस।*
*डेगे-डेगे चललीह जोजन भरि।*
*जाय जुमलीह अपना फुलवारी,*
*फूल देखि धरती खसलि मुरझाए,*
*तखन लोटि-लोटि कनै लगलीह फुलवारीमे।*[4]

संकल्प ओ पतिप्रेमक अभावमे दौनाक विह्वलताक चित्रण भेल अछि—

*भेल भिनसरवा ठाढ़ि दरवाजा मालिन करजोरि*
*मिनती करैय देव मुनिक नाम,*
*सुनु इन्द्रासन छपन कोटि देवता जे,*
*इन्द्र जनम देलन्हि,*
*छठि राति सौइरी घर मे ताकि दिन लिख देल सलहेस सन वर।*
*हुनक कारण आँचर बान्हलौं,*
*परपुरुष मुह नहि देखलौंह,*
*जनम पाय सिन्दुर नहि केलौंह,*
*जाहि स्वामीक कारण,*
*काँच बाँसक कोहबर बन्हलौंह,*
*लाल पलंग पर सेज ओछौलौंह,*
*सिकिआ चीरिकै बेनिया बनौलौंह*
*गौरी आओत नाहि॥*[5]

स्पष्ट अछि जे सलहेसक रूप आ गुणसँ दौना अत्यन्त आकृष्ट छलीह, मुदा सलहेसक अनुरक्ति नहि देखि दौनाक वेदना हाहाकार कऽ उठैछ—

*बारह बरिस सँ आँचर बन्हलौं,*
*वयस बीति गेल केश तिलकि गेल,*
*तैयो ने निरदैया सुपुरुख बूझाए रे की।*[6]

पकड़ियाक राजाक महलमे चूहरमल चोरि कऽ लेने छल, मुदा आरोप सलसेह पर लगलनि। परिणामतः ओ बंदी बना लेल गेलाह, मुदा दौना अपन बुद्धि-चातुर्य आ कुशल नीतिसँ चूहरमलकेँ पकड़बा आ चोरिक माल सेहो बरामद करबा देलनि। हुनक चतुरतापूर्ण नीतिक उपक्रम द्रष्टव्य थिक—

*सोलहो सिंगार कैलन्हि,*
*जादूक फूलडाली लैलन्हि,*
*रंगविरंगक फूल तोरलैन्ह*
*काँचे लौंग आराँची तोरलैन्ह,*
*चललीह स्वामीक उदेस।*

तथा पुनः

*दौना मालिन दछिनक चीर पीहर लेलैन्ह*
*पाटी समारि लेलैन्ह।*

*नैना काजर कैलैन्ह,*
*सीके सीके मिसी बैसा लेलैन्ह,*
*हाथमे वाँक पहिर लेलैन्ह,*
*पैर मे काड़ा पहिर लेलैन्ह,*
*माँग मे तारचन्द टिकुली साटि लेलैन्ह,*
*असले कसवीन बनि गेलीह।* [7]

अन्ततः सलहेस मुक्त भेलाह आ दौनाक सलहेस भेलथिन।

दौना अपन साधनासँ सिद्धिकेँ प्राप्त कयने छलीह। एक बेर हुनक नाह गंगामे भासय लगलनि तँ एहि युक्तिक प्रयोग कयलनि—

*गराक चन्द्रहार उतारि कै जल मे राखि देल,*
*ताहि पर चढ़ि लेल नट-नटिन,*
*भासल जाय चन्द्रहार,*
*पार उतरि गेल मगह मे,*
*मगह सँ मुँगेर जुमल,*
*राति-विराति वलबे पहुँचल,*
*मोकामा गाम मे गाछी,*
*ताकि कै डेरा खसाए देल,*
*तखन सभ वस्तु टाँगि देल,*
*सिरकी तानि देल॥* [8]

एहि प्रबन्ध-काव्यमे दौनाक व्यवहार-चातुर्यक सफल चित्रण भेल अछि; ओ एहन कुशल नायिकाक रूपमे वर्णित भेल छथि जे एक दिस चूहरमल सन चोरकेँ पकड़बाय आ चोरिक मालकेँ बरामद करबाय सलहेसकेँ आरोपसँ मुक्त करयबाक प्रेरणादायी प्रसंगक प्रकटीकरण भेल अछि तँ दोसर दिस शृंगार रससँ सराबोर भऽ नीरस पुरुषकेँ सरस बनाय मोहपाशमे बान्हबाक सफल प्रयत्न प्रकट भेल अछि।

उपर्युक्त किछुए प्रबन्ध-काव्यक उदाहरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे दृष्टिक व्यापकतामे ईहो कोनो विधासँ न्यून नहि, भनहि संख्याक दृष्टिसँ कम कहल जा सकैछ। आजुक 'फास्ट फुड', 'एस.एम.एस.' वा 'ट्वीटर' अर्थात् भागमभागक युगमे एकर गुणग्राहकोक संख्या थोड़ भेल गेल अछि, तैयो ईहो विधा क्रमशः समृद्ध होयबाक प्रति सचेष्ट अछि। ई सन्तोषक बात थिक।